

UNIT 1

Nature of Environmental Studies

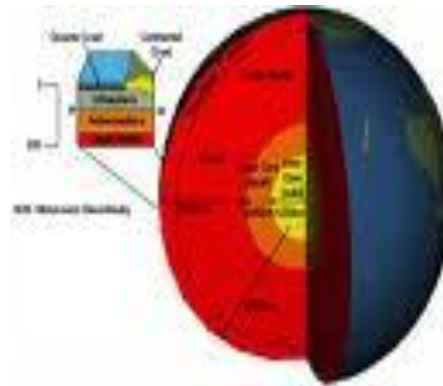
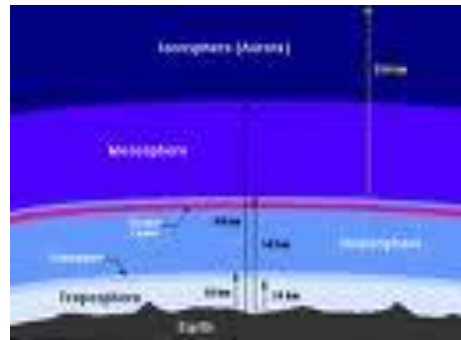
Nature of Environmental Studies

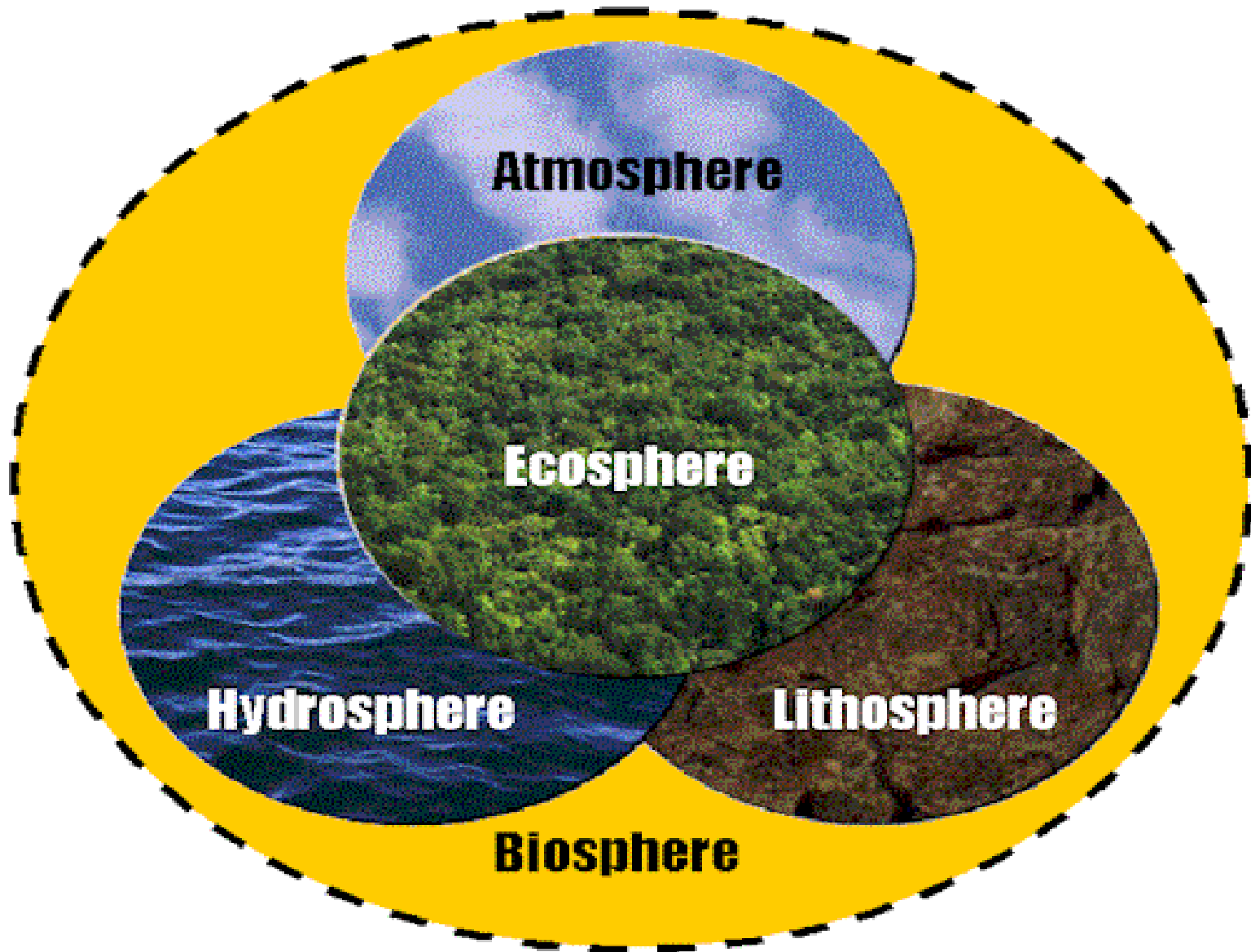
UNIT 1

Nature of Environmental Studies

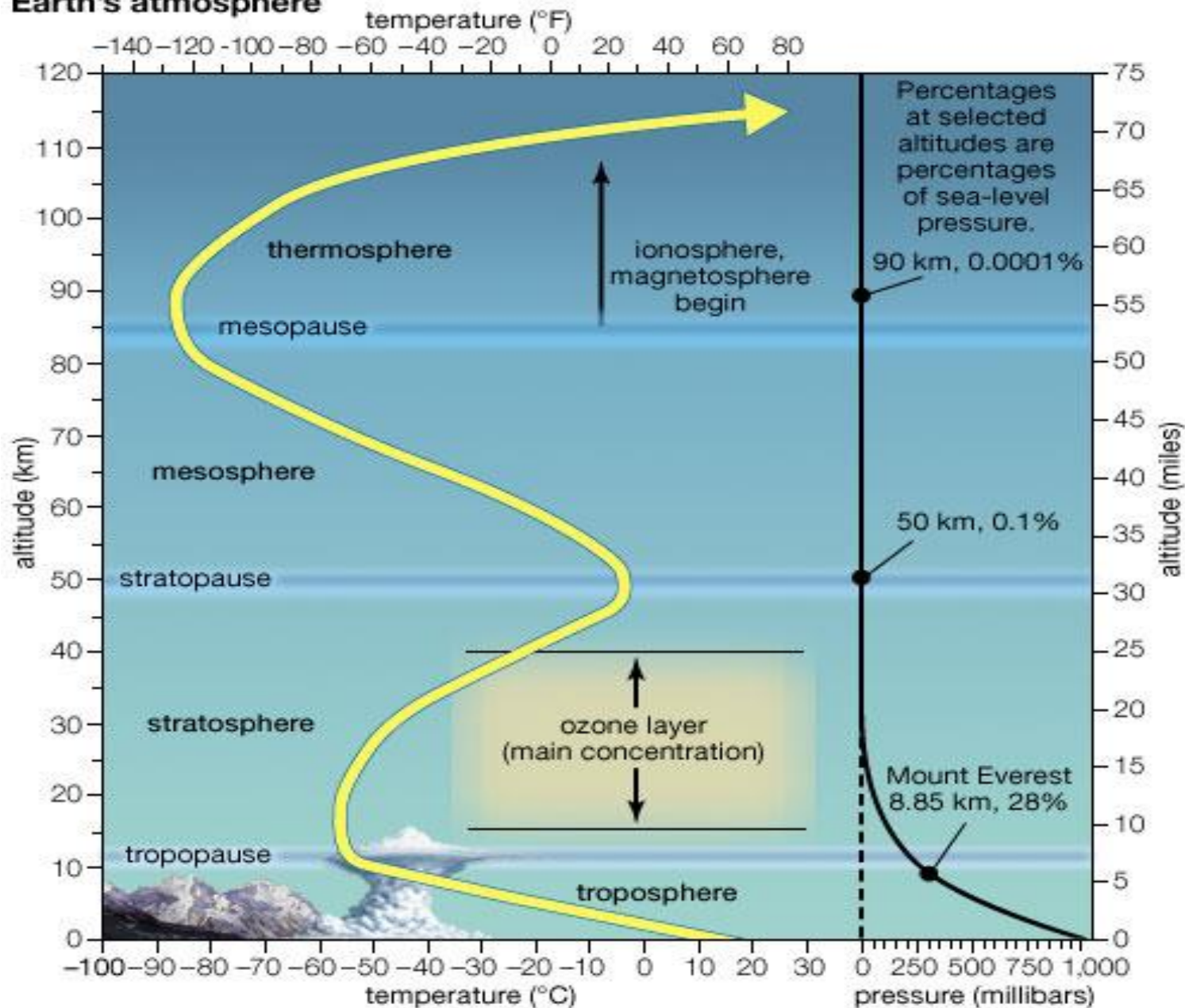
- The word 'Environment ' is derived from French word "ENVIRON" means – to encircle or surrounding of us.
- Definition – "The sum total of air, water ,soil and inter-relationship that exist among them with human being ,living organism and nonliving material "
- OR
- "The combination of biotic (living) and abiotic component (nonliving) component which are interacting to each other"

- Atmosphere
- Hydrosphere
- Lithosphere
- Biosphere



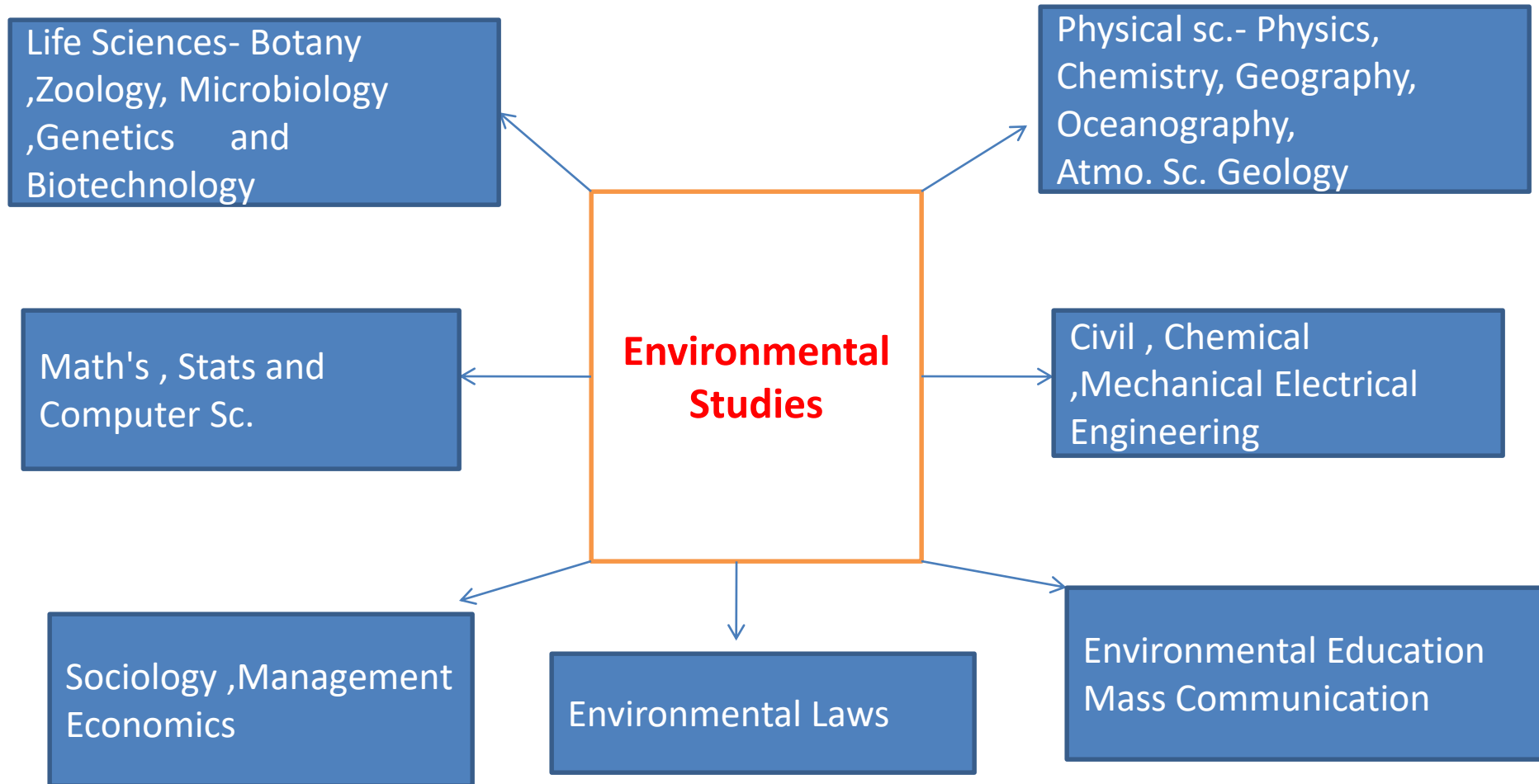


Earth's atmosphere



Multidisciplinary Nature Of Environmental Studies

Multidisciplinary Nature Of Environmental Studies



Scope Of Environmental Studies

Scope Of Environmental Studies

- 1) Natural Resources – Conservation and its management-
- 2) Ecosystem – Conservation and its management-
- 3) Biodiversity – Conservation and its management-
- 4) Control Environmental Pollution- Environment Engineer and Environment Manager
- 5) Research and Development in Environment- Environment Engineer and Environment Manager two new carrier options are coming....
- 6) Green Advocacy- Environmental Lawyers
- 7) Green Marketing – Env't,al Auditors, Env't,al Seller , Env't, Managers-
- 8) Green Media –Discovery channel , National Geographic , Animal Planet
- 9) Environmental Consultancy-

Importance and Need of Public Awareness

**Local level
and
Global level
Environmental Problems**

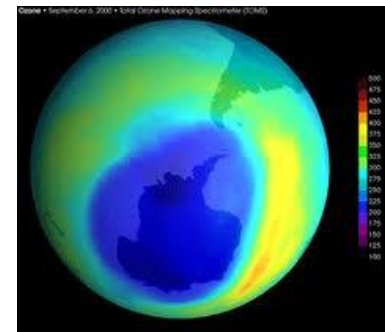
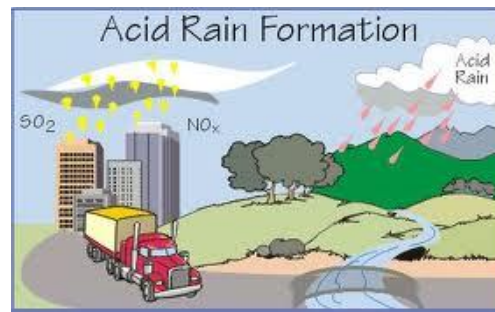
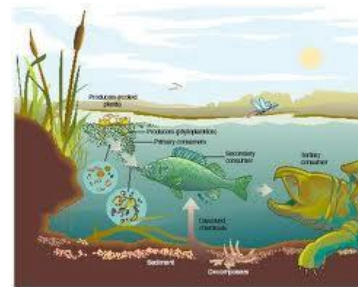
Local level Environmental Problems

- River or Lake Pollution
- Solid waste management.
- Soil erosion
- Water Logging
- Soil salinity
- Arsenic and Fluoride problems.



Global level Environmental Problems

- Deforestation
- Environmental Pollution
- Loss of Biodiversity
- Loss of Ecosystem
- Global Warming
- Acid Rain
- Ozone layer depletion



International Conference on Environment Protection



- **Stockholm Conference 1972**

The **United Nations Conference on the Human Environment** (also known as the **Stockholm Conference**) was an international conference convened under [United Nations](#) auspices held in [Stockholm](#), [Sweden](#) from June 5-16, 1972. It was the UN's first major conference on international environmental issues



- [Earth Summit 1992](#)

The United Nations Conference on Environment and Development (UNCED), also known as the Earth Summit, took place in Rio de Janeiro, [Brazil](#), from June 2-14, 1992.



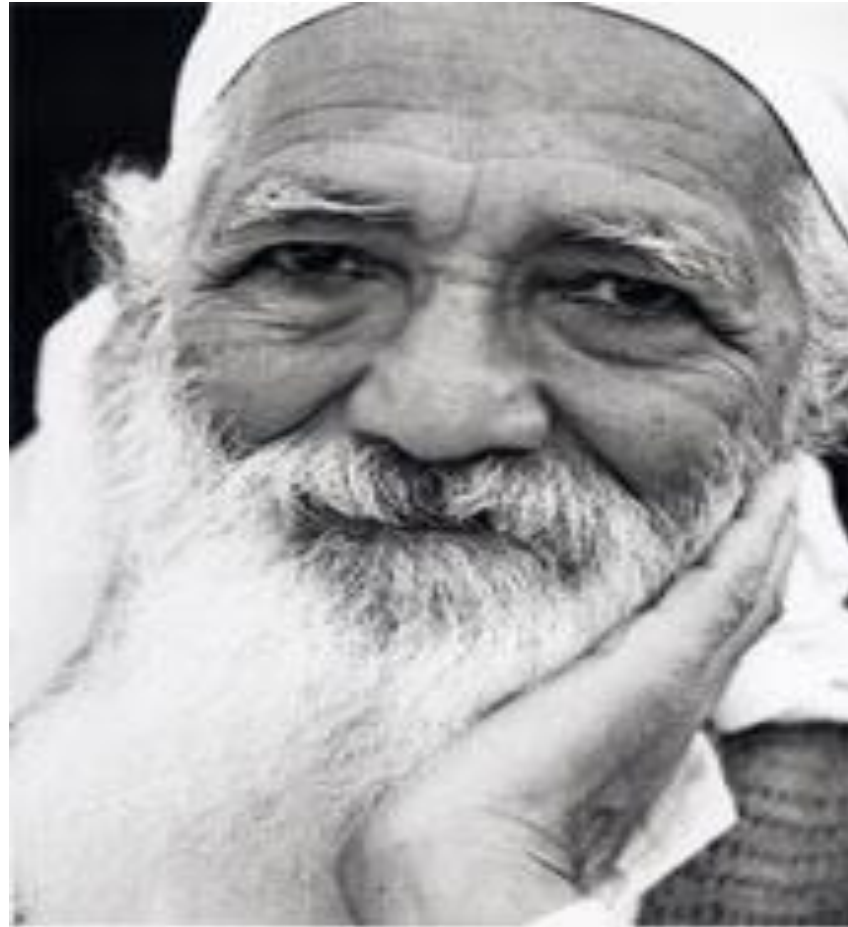
[world Summit 2002](#)

world Summit 2002 took place in [Johannesburg, South Africa](#), from 26 August to 4 September 2002. It was convened to discuss [sustainable development](#) by the [United Nations](#).

In 2012 the Kyoto Protocol to prevent climate changes and global warming runs out. To keep the process on the line there is an urgent need for a new climate protocol. At the conference in [Copenhagen](#) 2009 the parties of the UNFCCC meet for the last time on government level before the climate agreement need to be renewed.



Name of some Environmentalists



Mr.Sunderlal Bahuguna



'चिपको' की कहानी: 'अपनों' ने बिसराया, 'गैरों' ने दुलराया

लक्ष्मी प्रसाद पंत, देहरादून

जिस चिपको के चमत्कार को पूरी दुनिया सलाह करती है उसका तीसरा जन्मदिन आज उसकी जन्मस्थली रैनी में निपट खामोशी से मनाया जाएगा। इसकी दूर-दूर तक गूंज तो छोट्टिए आसपास भी भवक नहीं है। सब बेखबर है। वे भी जो इससे शिष्ट से जुड़े रहे हैं और जिन्होंने पेड़ों से अपने रिस्ते जोड़कर दुनिया को परभाव की तमीज सिखाई थी। खामोशी वहां भी है जिन्हें चिपको नाम से अपार खौलत मिली। जिस "उत्तरांचल" में चिपको की वर्षगांठ पर सानदार जलसा होना चाहिए था वहां रैनी के एक छोटे से आयोजन को छोड़कर कहीं कुछ नहीं है। चिपको की तीसरी वर्षगांठ पर संपूर्ण एनडीओ समुदाय को भी जैसे लकड़वा घर गया है।

अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर चिपको आंदोलन अपने ही अपना व्यवहार

प्रभाव फैलाने में कामयाब रहा हो लेकिन अपनी जन्मस्थली उत्तरांचल में चिपको तीस साल बाद भी गुमनाम सा है। जिस आंदोलन को पहाड़ों के घर-घर में जाना था वह आंदोलन सिर्फ अपने बड़े नाम के साथ कुछ चुनिंदा लोगों के प्रभामंडल की खोपा बढ़ा रहा है। कैसे बिडंबन है कि

तीसवीं वर्षगांठ पर दिग्गज भी बेखबर, रैनी में एक छोटे से आयोजन के सिवाय पूरे उत्तरांचल में खामोशी

चिपको को दिग्गज भी भूले

देहरादून चिपको के जल पर बड़े-बड़ों के बारे-बखारे हो गए हैं लेकिन इस आंदोलन की जन्मस्थली रैनी में आज मनाई जा रही उसकी तीसरी वर्षगांठ में चिपको से जुड़ा कोई भी दिग्गज शामिल नहीं हो रहा है। दिलचस्प तो यह है कि चिपको से जुड़कर मैग्जसे पुरस्कार हाटकते वाले दिग्गज भी यहां नहीं पहुंच रहे हैं। सलाह जहां के पूर्व प्रधान धनसिंह तथा तथा एलबलर वर देवलपन्त के संयोजक सुनील कैथोला कहते हैं कि सिर्फ रयानीय जन-समुदाय ही चिपको को याद कर रहा है। कैथोला कहते हैं कि रैनी गाँव के लोग और रैनी को नहीं भूलें हैं। उत्तरांचल के लोगों के लिए भले ही जिला टवी के कोई भाषण व हो लेकिन नंदादेवी डट औराहसी पर चिपको की तीसरी वर्षगांठ पर पूरे दुनिया से संदेश आ रहे हैं।

सतर के दशक में जिस आंदोलन के जगह पहाड़ों का जल जो वन, जंगल, खेत, पशु और चारे जैसे जमीनी सवाल जुड़े थे आज वह केवल इंटरनेट पर नजर आता है। दिलचस्प तो यह है कि इन तीन दशकों में चिपको का नेतृत्व जहां पूरी दुनिया घूम आया वहीं ग्रामीण स्तर के इसके मुरमा

आज भी गुमनामी के अंधेरे में है। चिपको के नेतृत्व का जहां तक सकल है वहां तो आंदोलन के दूर-आल से ही इसका श्रेय लेने की सोच मची रही। आंदोलन चरम पर पहुंचने में पहले ही



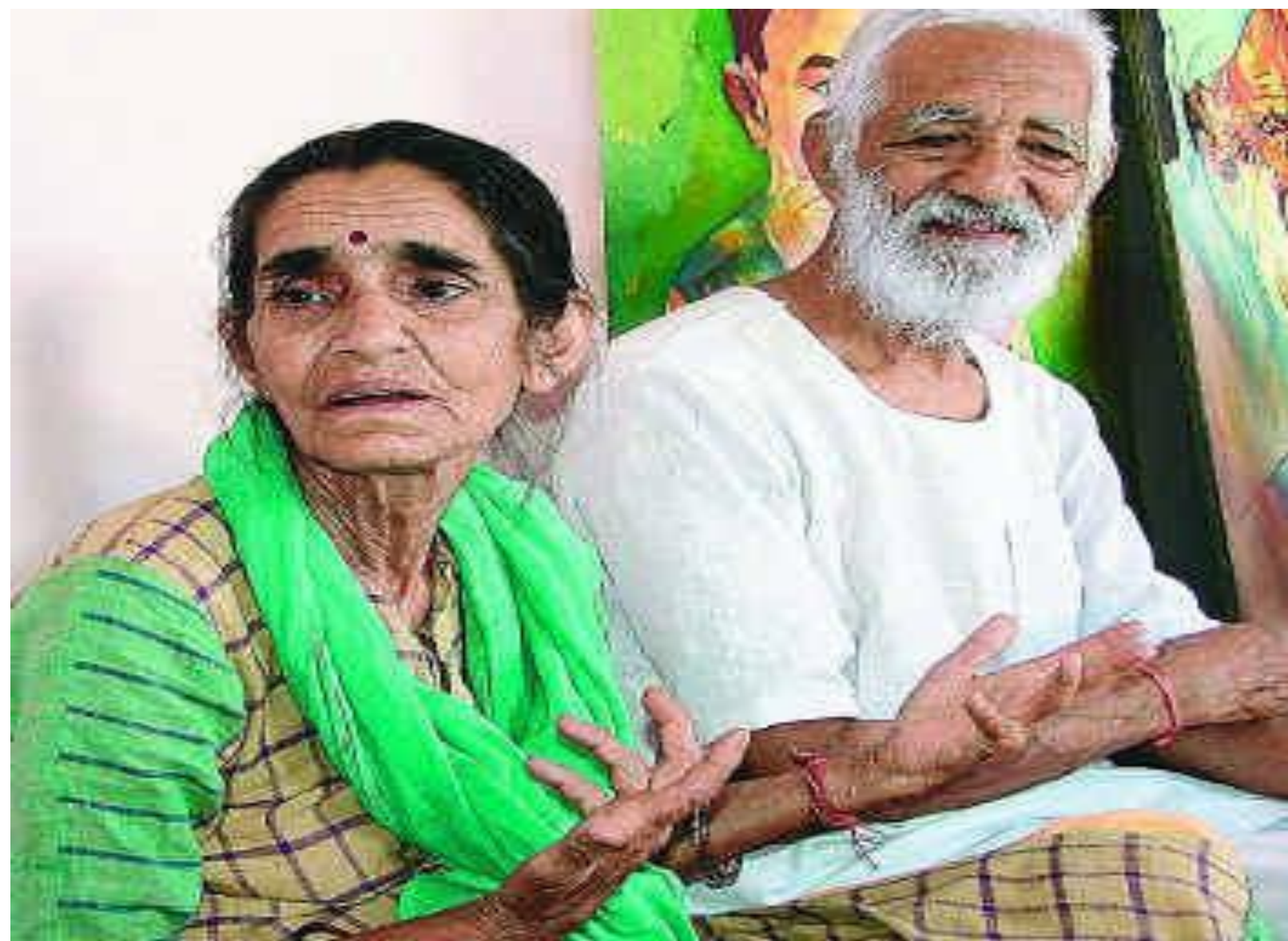
■ चिपको आंदोलन की प्रेरणा गौरा देवी व वर्ष 1974 के मार्च माह में चिपको आंदोलन चरम पर था। इस दौरान आयोजित एक चिपको रैली का दृश्य। सौजन्य: अनुपम मिश्र

विस्तारने लगा था। कंगोबस जनता धीरे-धीरे गायब होती चली गई और चिपको का प्रभामंडल कुछ गिने-चुने व्यक्तिओं के सिर पर चमकाने लगा। आंदोलन की प्रेरणा गौरा देवी, लोकगायक चमरनम सैकनी, रवींद्र सिंह तथा भूम मिश्र ने। जैसे राष्ट्रीय नेतृत्व नेतृत्व में चल गए और चिपको संगठन की एक इंदुपट्टी के रूप में कन्वलेटेंटों के साथी का निर्माण करवा रहा गया। यही वाक्य है कि

चिपको के गाढ़ बड़े खाने खाने हेल्लेपाटी, नीलिपाटी और लोन्तुबटिया गाढ़ में आज भी सब अलग चलन हवा में तलकों भाज रहे हैं और अपने चिपको को ही भूल चिपको खाने की कसरत में जुटे हैं। चिपको की जन्मस्थली उत्तरांचल ने इन तीस सख्तों में हैलअंग्रेज बदलाव देखा है। चिपको जैसे विकास के मंत्र को थिलान होतें तो देखा तो इस आंदोलन के बाद पश्चिमी राज्यों में एनपीओ ने

जिस तरह चिपको को एकाप्रोटेक्ट की तरह इस्तेमाल किया उसका असर भी देखा है। हालांकि एनपीओ ने चिपको के खाने पहाड़ों के सामाजिक जीवन को उग्रने की बात कही लेकिन दूर-दूर तक इनमें पहाड़ों के प्रति भक्तिवा कहीं नहीं दिखी। चिपको जैसे आंदोलन ने क्या इन तीस सख्तों में पहाड़ों की वकालत करने वाला कोई छोटा सा मंत्र भी एनपीओ ने फैल नहीं कर पाया। हां, इनका

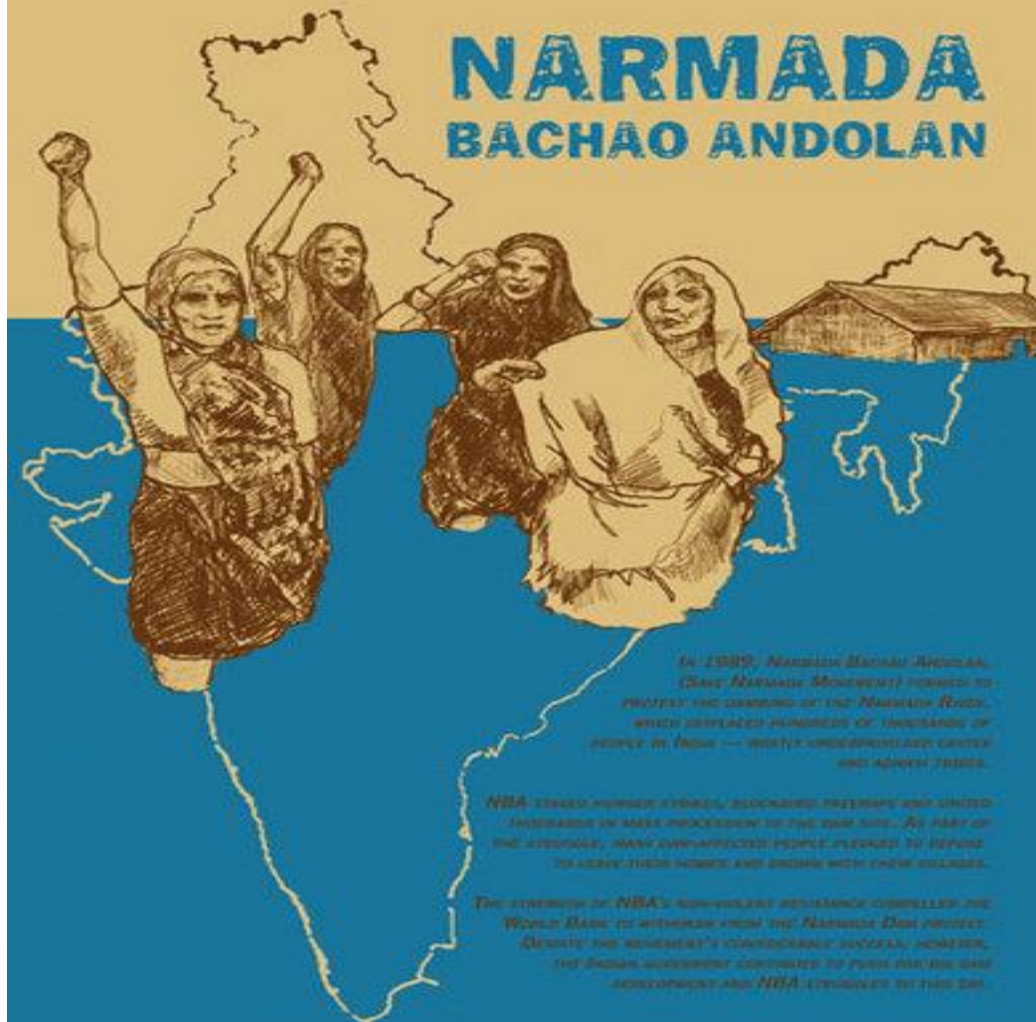
जसर हुआ कि चिपको का नाम लेकर स्वदेशी और खासतौर विदेशी संस्थापनों के चल पर एनपीओ ने पहाड़ों में अपना समानता खोज खड़ा कर दिया है। जिसके चलते छद्म आंदोलनो व छद्म कार्यकर्ताओं की एक पूरी जमात खड़ी हो गई जिन्हें ग्रामीण स्तर पर कार्यगत सामाजिक कार्यकर्ताओं की आनम-आनम करके उनके मर्जों को इच्छित किया।







NARMADA BACHAO ANDOLAN



In 1989, Narmada Bachao Andolan (Save Narmada Movement) formed to oppose the damming of the Narmada River, which displaced hundreds of thousands of people in India --- mostly underprivileged caste and lower tribes.

NBA staged hunger strikes, blockaded projects and united thousands in mass procession to the dam site. As part of the struggle, many disadvantaged people planned to refuse to leave their homes and engage with their villages.

The strength of NBA's non-violent resistance compelled the World Bank to withdraw from the Narmada Dam project. Despite the movement's considerable success, however, the Indian government continued to push for the dam development and NBA continues to this day.

CELEBRATE PEOPLE'S HISTORY

Save the World Project — Save Peoples' Movements — People's Internationalism — October 2008





Medha Patkar





Arundhati Roy



Tehari Dam



Tehari Dam



Tehari Dam





Water-man of Rajasthan, Rajendra Singh



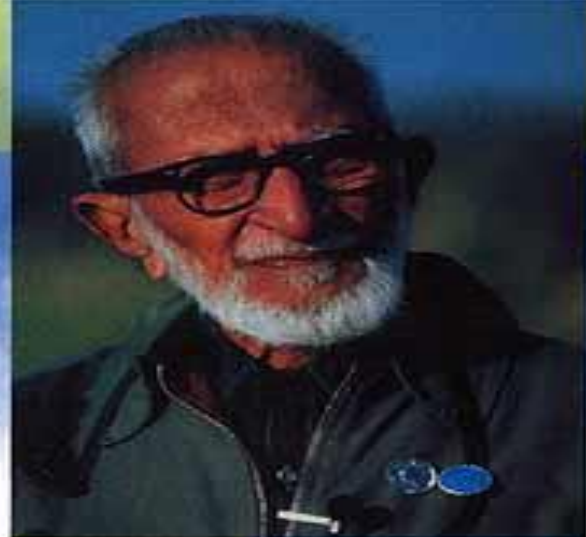
Mr. Rajendra Singh

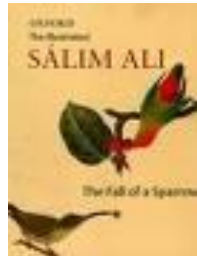


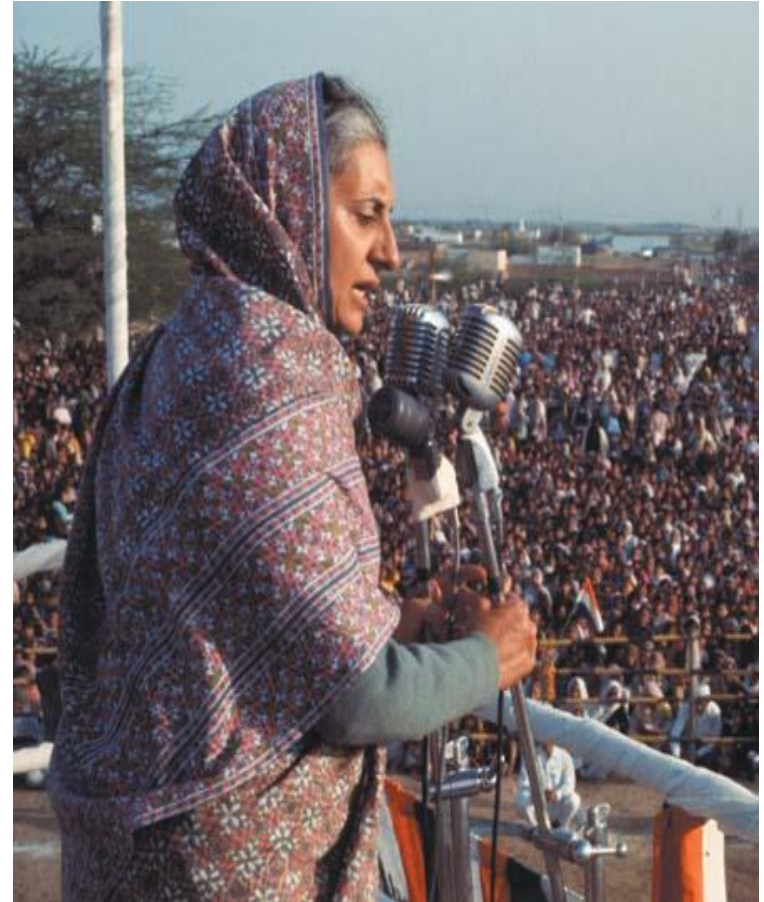


Salim Ali
India's Birdman

Rupa
Charitavali Series



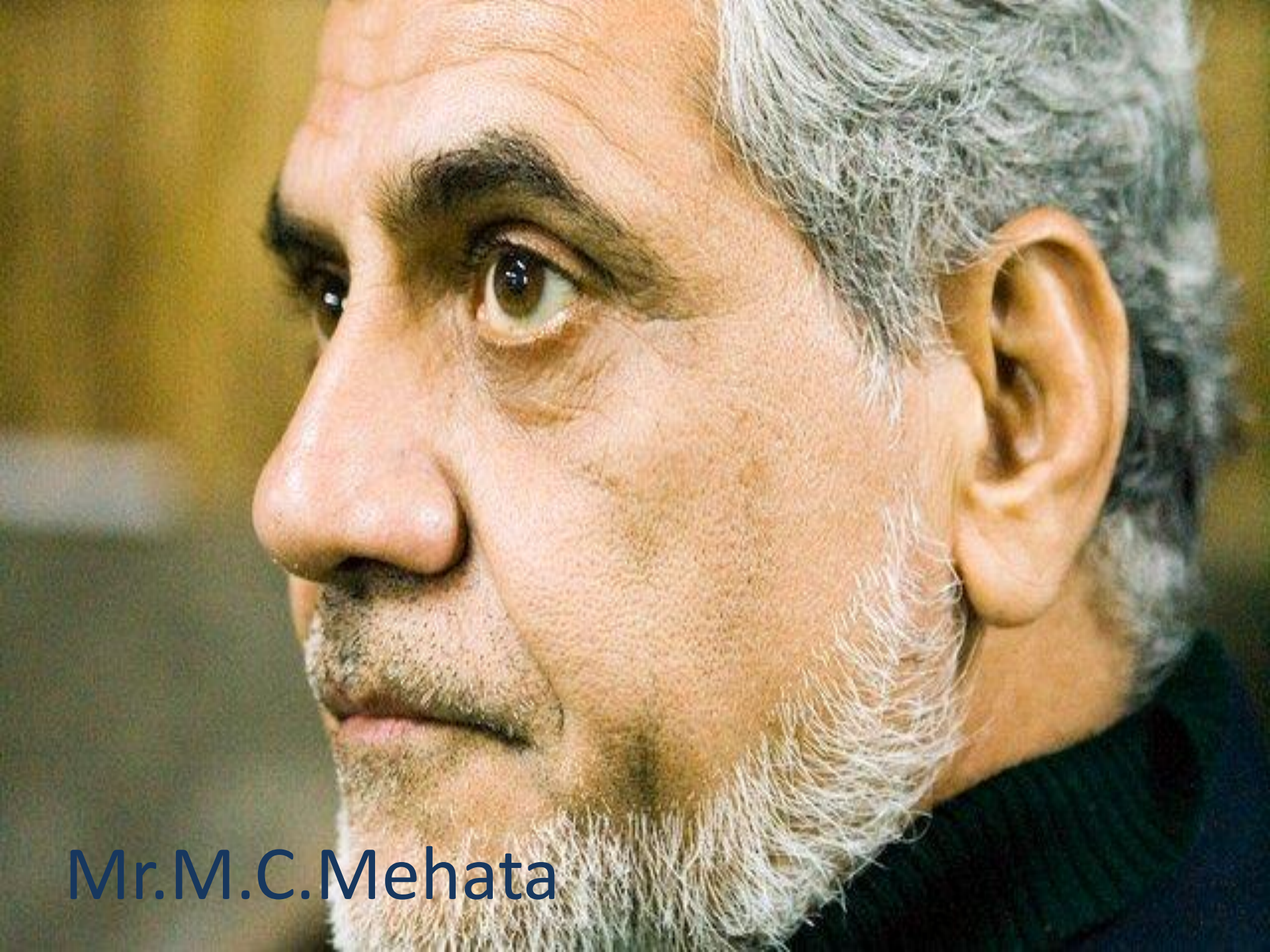




Late Prime Minister
– Indira Gandhi



Mrs maneka Gandhi



Mr.M.C.Mehata

Environmental Minister of India- Mr. Jayram Ramesh



Government and Non-government Organization



BOMBAY NATURAL HISTORY SOCIETY

ESTABLISHED 1883

Patron :

H. E. THE VICEROY OF INDIA.

Vice-Patrons:

H. E. H. THE NIZAM OF HYDERABAD, G.C.S.I., G.B.E. ;

H. H. THE MAHARAJA OF BARODA ; H. H. THE MAHARAJA OF
TRAVANCORE, G.C.I.E. ; H. H. THE MAHARAO OF CUTCH, G.C.S.I.,
G.C.I.E. ; H. H. THE MAHARAJA OF JODHPUR, G.C.I.E., K.C.S.I.,
K.C.V.O. ; H. H. THE MAHARAJADHIRAJ OF PATIALA ; H. H.
THE MAHARAJA OF REWA, K.C.S.I. ; H. H. THE MAHARAJA OF
BHAVNAGAR ; H. H. THE NAWAB OF JUNAGADH, G.C.I.E., K.C.S.I. ;
SIR DAVID EZRA, Kt., F.Z.S. ; F. V. EVANS, Esq. ; A. S. VERNAY, Esq. ;
Lt.-Col. K. G. GHARPUREY, I.M.S. (Retd.), W. S. MILLARD, Esq., F.Z.S.

President:

H. E. Sir ROGER LUMLEY, G.C.I.E., D.L.,
GOVERNOR OF BOMBAY.



REFERENCE COLLECTIONS, LIBRARY AND OFFICES
6, APOLLO STREET, BOMBAY.
MUSEUM
NATURAL HISTORY SECTION, PRINCE OF WALES' MUSEUM.











Save the Environment